Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ गणगौर व्रत कथा ॥

॥ जय ईसर-गौरा ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ गौरा की पार्थिव शिव पूजा ॥

यह शिव-पार्वती और नारद की प्रचलित गणगौर कथा का स्वतंत्र हिंदी रूपांतरण है। राजस्थान के लोकगीतों और घरों में अन्य कथारूप भी सुनाए जाते हैं।

चैत्र शुक्ल तृतीया को माता पार्वती नदी के तट पर स्नान करने गईं। वहाँ उन्होंने रेत से एक छोटा पार्थिव शिवलिंग बनाया और श्रद्धा से भगवान शिव की पूजा की। उपलब्ध रेत से ही प्रतीकात्मक अर्पण करके उन्होंने पूजा पूर्ण की।

कथा के अनुसार शिव उस पार्थिव रूप से प्रकट हुए और माता की भक्ति से प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि इस तिथि पर शिव-गौरी का स्मरण करने वालों को मंगल की कामना का अवसर मिलेगा। पार्वती ने प्रणाम किया और लौटने लगीं, पर पूजा में बहुत समय लग गया था।

शिव और देवर्षि नारद ने उनके लौटने में देर का कारण पूछा। माता ने संकोच से कहा कि नदी किनारे उनके मायके के लोग मिल गए थे और उनके आग्रह पर वे भोजन के लिए रुक गई थीं। शिव ने हँसकर कहा कि वे भी उन लोगों से मिलना और वहाँ भोजन करना चाहेंगे।

माता पार्वती मन ही मन चिंतित हुईं। वे शिव के साथ उसी दिशा में चलीं और प्रार्थना की कि सबका मान बना रहे। तभी नदी के पास एक भव्य भवन दिखाई दिया।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ मायावी भवन और नारद का आश्चर्य ॥

भवन में माता के संबंधियों जैसे लोग शिव और नारद का स्वागत करते दिखाई दिए। शिव ने उनका आतिथ्य स्वीकार किया। कुछ समय बाद सब वहाँ से लौटने लगे। रास्ते में शिव ने कहा कि उनकी माला पीछे रह गई है। नारद उसे लेने वापस गए।

नारद ने वहाँ पहुँचकर देखा कि भवन की जगह वन है। एक वृक्ष पर शिव की माला मिली। वे चकित होकर माला लेकर लौटे और शिव से पूछा कि अभी देखा हुआ भवन कहाँ गया। शिव ने मुस्कराकर इसे माता पार्वती की लीला बताया।

कथा में माता की गुप्त पार्थिव पूजा और उनकी प्रार्थना को इस दृश्य से जोड़ा गया है। नारद ने माता की निष्ठा और श्रद्धा का गुणगान किया। शिव-पार्वती के इस प्रसंग को घरों में गणगौर व्रत की कथा के रूप में सुनाया जाता है।

कथा का भाव

रेत का छोटा शिवलिंग यह याद दिलाता है कि श्रद्धा के लिए भव्य सामग्री आवश्यक नहीं। ईसर-गौरा की संयुक्त पूजा में संबंध, सम्मान और एक-दूसरे के साथ का भाव है। कथा के चमत्कार आस्था की भाषा हैं, निश्चित सांसारिक परिणाम का वादा नहीं।

॥ ॐ गौरीशंकराय नमः ॥